एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–9 से 12

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य

(जुलाई–2023 और जनवरी –2024) सत्रों के लिए

जुलाई–2023 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 अप्रैल, 2024

जनवरी–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 अक्तूबर, 2024

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

मॉड्यूल '1' – कहानी: विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.: 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानी:स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09/टी.एम.ए./2023–2024
कुल अंक : 100

खंड 'क'

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×4 = 60

(क) छोटी कहानी की अवधारणा के निर्धारण में यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

(ख) वस्तु और शिल्प की दृष्टि से 'पराया सुख' कहानी का विश्लेषण कीजिए।।

(ग) ब्रिटेन में कहानी के विकास को रेखांकित कीजिए।

(घ) विविध भारतीय भाषाओं में आधुनिक कहानी के सूत्रपात पर प्रकाश डालिए।

(ड.) नई कहानी और साठोत्तरी कहानी में किए गए शिल्पगत प्रयोगों की चर्चा कीजिए।

खंड 'ख'

2. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : **10 × 4 = 40**

(क) पाठकवर्ग के विकास में शिक्षा की भूमिका

(ख) कहानी आलोचना का पूर्व–परिदृश्य

(ग) दक्षिण–पूर्वी एशिया में कहानी

(घ) टैगोर की कहानी 'पत्नी का पत्र'

एम.एच.डी.–10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10/टी.एम.ए./2023–2024
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10 x 2 = 20

(क) लाडली को काकी से अत्यंत प्रेम था। बेचारी भोली लड़की थी। बाल–विनोद और चंचलता की उसमें गंध तक न थी। दोनों बार जब उसके माता–पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाडली का हृदय ऐंठ कर रह गया। वह झुँझला रही थी कि यह लोग काकी को क्यों बहुत–सी पुड़ियाँ नहीं दे देते। क्या मेहमान सब की सब खा जायेंगे? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जाएगा? वह काकी के पास जा कर उन्हें धैर्य देना चाहती थी, परंतु माता के भय से न जाती थी। उसने अपने हिस्से की पूरियाँ बिल्कुल न खायी थीं। अपनी गुड़िया की पिटारी में बन्द कर रक्खी थी। उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी। उसका हृदय अधीर हो रहा था! बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूरियाँ देख कर प्रसन्न होंगी! मुझे खूब प्यार करेगी?

(ख) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह कैसे चाहतीं हैं नचाती है। लेटे ही लेटे गर्व से बोले चलो हम आते हैं। यह कह कर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंता से पान के बीड़े लगा कर खाये। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दरोगा के पास आ कर बोले, बाबू जी आशीर्वाद् कहिए, हमसे ऐसा कौन–सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गयीं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा–दृष्टि रहनी चाहिए।

(ग) क्रिया के पश्चात् प्रतिक्रिया नैसर्गिक नियम है। शंकर साल भर एक तपस्या करने पर भी जब ऋण से मुक्त हेाने में सफल न हो सका तो उसका संयम निराशा के रूप में परिणत हो गया। उसने समझ लिया कि जब इतना कष्ट सहने पर भी साल भर में साठ रुपये से अधिक न जमा कर सका तो अब और कौन सा उपाय है जिसके द्वारा इसके दूने रुपये जमा हों। जब सिर पर ऋण का बोझ ही लादना है तो क्या मन भर का और क्या सवा मन का। उसका उत्साह क्षीण हो गया, मिहनत से घृणा हो गयी। आशा उत्साह की जननी है, आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। शंकर आशा–हीन होकर उदासीन हो गया।

2. प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त राष्ट्रवाद को स्पष्ट कीजिए। 16

3. प्रेमचंद किसान समस्या को किस प्रकार देखते थे? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए। 16

4. 'आलोचकों की दृष्टि में प्रेमचंद' विषय पर एक निबंध लिखिए। 16

5. 'गुल्ली डंडा' कहानी का विश्लेषण करते हुए उसमें अभिव्यक्त जीवन मूल्य को रेखांकित कीजिए। 16

6. 'सुजान भगत' कहानी का विश्लेषण करते हुए उसका मंतव्य स्पष्ट कीजिए। 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11/टी.एम.ए./2023–2024
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10x2=20

(क) शकलदीप बाबू एक–दो क्षण चुप रहे, फिर दाएं हाथ को ऊपर–नीचे नचाते बोले, "फिर इसकी गारंटी ही क्या है कि इस दफे बाबू साहब ले ही लिए जाएंगे? मामूली ए. जी. आफिस की क्लर्की में तो पूछे नहीं गए, डिप्टी कलक्टरी में कौन पूछेगा? आप में क्या खूबी है, साहब, कि आप डिप्टी कलक्टर हो ही जाएंगे? थर्ड क्लास बी. ए. आप हैं, चौबीसो घंटे मटरगश्ती आप करते हैं, दिन–रात सिगरेट आप फूंकते हैं! आप में कौन–से सुर्खाब के पर लगे है, जनाब? भाई, समझ लो, तुम्हारे करम में नौकरी लिखी ही नहीं। अरे हाँ, अगर सभी कुकुर काशी ही सेवेंगे तो हंडिया कौन चटेगा? डिप्टी कलक्टरी, डिप्टी कलक्टरी! सच पूछो, तो डिप्टी कलक्टरी नाम से मुझे घृणा हो गई है! और उनके होंठ बिचक गए।

(ख) मैंने देखा, मुझसे ज्यादा वह प्रसन्न है। वह कभी किसी का एहसान नहीं लेता, पर मेरी खातिर उसने न जाने कितने लोगों का एहसान लिया। आखिर क्यों? क्या वह चाहता है कि मैं कलकत्ता आकर रहूँ उसके साथ, उसके पास? एक अजीब–सी पुलक से मेरा तन–मन सिहर उठता है। वह ऐसा क्यों चाहता है? उसका ऐसा चाहना बहुत गलत है, बहुत अनुचित है!.... मैं अपने मन को समझाती हूँ, ऐसी कोई बात नहीं है, शायद वह केवल मेरे प्रति किए गए अपने अन्याय का प्रतिकार करने के लिए यह सब कर रहा है ! क्या वह समझता है कि उसकी मदद से नौकरी पाकर मैं उसे क्षमा कर दूँगी, या जो कुछ उसने किया है, उसे भूल जाऊँगी? असम्भव! मैं कल ही उसे संजय की बात बता दूंगी।

(ग) उसने भौंहे समेट ली। मेरी आँखों में आँखें डालकर उसने कहना शुरू किया, "जो आदमी आत्मा की आवाज कभी – कभी सुन लिया करता है और उसे बयान करके उससे छुट्टी पा लेता है, वह लेखक हो जाता है। आत्मा की आवाज जो लगातार सुनता है, और कहता कुछ नहीं है, वह भोला–भाला सीधा–सादा बेवकूफ है। जो उसकी आवाज बहुत ज्यादा सुना करता है और वैसा करने लगता है, वह समाज –विरोधी तत्वों में यो ही शामिल हो जाया करता है। लेकिन जो आदमी आत्मा की आवाज जरूरत से ज्यादा सुन करके हमेशा बेचैन रहा करता है और उस बेचैनी में भीतर के हुक्म का पालन करता है, पागल है। पुराने जमाने में सन्त हो सकता था। आजकल उसे पागलखाने में डाल दिया जाता है । "

2. 'बदबू' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 16

3. एक कहानीकार के रूप में मोहन राकेश का मूल्यांकन कीजिए। 16

4. 'ड्राइंग रूम' कहानी में अभिव्यक्त जीवन दर्शन को स्पष्ट करते हुए उसकी कथा संरचना पर प्रकाश डालिए। 16

5. 'सुख' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिए। 16

6. दलित साहित्य की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए 'सिलिया' कहानी के महत्व की चर्चा कीजिए। 16

एम. एच. डी.–12
भारतीय कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12/टी.एम.ए./2023–2024
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः **10x2=20**

(क) प्रेस में विनायक को छोड़कर और कोई नहीं था। उस दिन के लिए तयशुदा कार्य में दो काम बाकी थे – पहला, दो निमन्त्रण–पत्र कम्पोज करके उसका प्रूफ निकालना और दूसरा, प्रूफ – शोधन किये अभिनन्दन पत्र में 'करेक्शन' लगाकर छापना।

'छापने के लिए कागज़ भी तो काटना होगा।' बुदबुदाते हुए जब वह ट्रेडिल में कसे हुए 'चेस' को खोल रहा था, उसके मन में एक छोटी–सी' आशा अंकुरित हुई– बहुत सी साधारण इच्छा, आप चाहें तो बचपना भी कह सकते हैं।

चेस को खोलकर 'स्टोन' पर रखा। वह भी एक विवाह निमन्त्रण कार्ड को ही मैटर था। विनायक ने मैटर में वर के नामवाले अक्षरों को ब्रश से पोंछा। स्याही हट जाने पर चाँदी की तरह उजले अक्षर चमक उठे।

'चिरंजीव श्रीधर'– इन अक्षरों के टाइप–दायीं से बायीं ओर जैसा कि आइने में प्रतिबिम्बित होता है – साफ दिखाई दिये ।

(ख) ठहरो! ठहरो!" कहते हुए हाथ उठाकर उसने दोनों पक्षों को शांत किया। फिर उसने दोनों पक्षों से पूछा, "क्या बात है मैया, क्या मामला है?" उसका स्वर, उसकी अवस्था और पहनावा वृद्धा देखते ही वृद्धा की हिम्मत बँधी। आवाज़ कुछ धीमी करके यथासंभव सद्भाव के साथ वह बात बताने लगी, "तुम्हीं बताओ बेटी! यह लोग पानी के लिए आई हैं। यह कोई सरकारी नल तो नहीं है न? पैसा खर्च करके लगाया हुआ है। हर साल म्यूनिसपैलिटी को हम टैक्स भी देते हैं। ऐसे में पहले हमारे बच्चों ने आकर मना किया। इन लोगों ने बात सुनी नहीं। फिर मैंने आकर मना किया। फिर हमारा माली आया, तो वह लड़की कहती है– अगर तू मर्द है, तो कुत्ता छोड़!" देखो तो उँगली – भर नहीं है लड़की!" कहकर उँगली से सत्यवती की ओर वृद्धा ने इशारा किया।

(ग) उसके दूसरे दिन फिर डुबती साँझ की बेला में बाघ की दहाड़ सुनाई पड़ी। वह उच्छन्न होकर गरजता घूम रहा है, सचमुच जैसे गरगराती आवाज में संदेश दे रहा है, "यहां मेरे पुरखों के जमाने से बाघ का सिंहासन था, वन का राजा है बाघ, और अगर बाघ नहीं है तो बाघिन, बाघ के वंश का जो कोई भी, बात एक ही है। बीच में पता नहीं कैसे कुछ दिन खाली रह गए थे। लेकिन मैं फिर लौटा हूं, इस वंश का अटूट क्रम फिर शुरू हो गया।" फिर सारी रात पहर–पहर चिल्लाते रहे सियार, सचमुच जैसे कि वे बाघ युवराज या बाघ युवरानी के भाट थे। लेडेंग के कुछ लोग इस तरह से भी सोच रहे थे जैसे खुद धूर्व सिंह। पहली रात को गरजते – गरजते बाघ चला गया कहीं दूर और फिर एक साथ अचानक सियारों ने चिल्लाना शुरू कर दिया जैसे जान बचाने के लिए ही वे इस तरह चीख रहे हों। चिल्लाना बंद हुआ कि जान गई।

2. 'ट्रेडिल' कहानी के कथानक का विश्लेषण कीजिए। **16**

3. 'अपने लिए शोकगीत' कहानी के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। **16**

4. 'बघेई' कहानी का कथानक बताते हुए उसके महत्व की चर्चा कीजिए। **16**

5. कोंकणी कहानी संसार का सामान्य परिचय देते हुए 'ओऽरे चुरुंगन मेरे.....' कहानी का महत्व स्पष्ट कीजिए। **16**

6. दीनानाथ नादिम का परिचय देते हुए उनकी कहानी 'जवाबी कार्ड' का विश्लेषण कीजिए। **16**